Dr. Vandana Suman
Associate Professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M.A. Semester — III
Phil. CC—10
Contemporary Western Philosophy

GRB BOOKS

Notes / 1. Pragmatism: James' Conception of Truth (जेम्स का सत्य सिद्धान्त)

जेम्स सबसे महत्वपूर्ण अर्थक्रियावादी दार्शनिक है। अर्थक्रियावाद वह सिद्धान्त है जो किसी विश्वास को अपने आप में सत्य नहीं मानता है बल्कि इसकी सत्यता का निरूपण इसके फल के आधार पर करता है। अर्थक्रियावाद वास्तव में सत्य सिद्धान्त के लिए ही अधिक प्रसिद्ध है।

अर्थक्रियावाद की मान्यता है कि निरपेक्ष सत्य कोई नहीं है। कोई शाश्वत सत्य भी नहीं है। जेम्स ने कहा है कि "सत्य हमारे मानसिक प्रत्ययों और हमारे इन्द्रिय अनुभवों के बीच एक सम्बन्ध मात्र है।" बाहर संसार में पहले से ही प्रस्तुत कोई सत्य नहीं है जिसे हम खोज निकालें। इसके विपरीत तथ्य यह है कि मनुष्य सत्य की रचना करता है। मनुष्य के उद्देश्य और संसार के बीच एक समंजन का प्रश्न होता है तो सत्य की उत्पत्ति होती है। जैसे जब हम स्वास्थ्य की बात कहते हैं तो क्या स्वस्थ शरीर में स्वास्थ्य जैसी कोई वस्तु है जो ठीक-ठीक रक्त संचार करती है और शरीर को क्रियाशील बनाती है। नहीं, ऐसा नहीं है। स्वास्थ्य उसे कहते हैं जो इस बात का संकेत करता है कि शरीर के अंग उचित रूप से परिचालित होते हैं। इसी प्रकार

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes 1

हमारे विचारों और प्रत्ययों का समन्वित व्यापार सत्य कहलाता है। हमारे सम्पूर्ण जीवन के विचारों को ध्यान में रखा जाता है।

इससे यह स्पष्ट है कि सत्य प्रायः परिवर्तित होते रहते हैं। सत्य के परिवर्तन का सुन्दर उदाहरण नक्षत्रों की गति माना जाता था। इसके अनुसार पृथ्वी स्थिर थी और सूर्य आदि नक्षत्र इसकी परिक्रमा करते थे। इस सिद्धान्त से संतोषजनक काम चल जाता था, इसलिए इसे सत्य माना जाता था। कुछ समय बाद कापरनिकस ने यह घोषित किया कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है। इस सिद्धान्त ने अनेक बहुत सी समस्याओं को हल कर दिया जो टालेमिक सिद्धान्त से हल नहीं होती थी। अतः कापरनिकसीय सिद्धान्त को अधिक सत्य माना जाने लगा। भविष्य में यदि कोई नया सिद्धान्त प्रस्तुत कर दिया गया तो कापरनिकसीय सिद्धान्त भी असत्य सिद्ध हो जायेगा। विज्ञान ने जिन सत्यों का उद्घाटन किया है उनके शाश्वत सत्य होने का कोई प्रमाण नहीं है।

पिछली कुछ दशाब्दियों में विज्ञान ने इतनी करवटें ली हैं कि वर्तमान सिद्धान्तों को शाश्वत सत्य मान लेना सम्भव नहीं है। हमें निश्चित और

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes!

शाश्वत सत्य की खोज ही न
करनी चाहिए। जैसे आकार के
बदली का मूल्य बदलता रहता है
और उनकी भूमि में परिवर्तन
होता रहता है वैसे ही सत्य भी
बदलता रहता है।

सत्यता ज्ञान की
विशेषता है जो जीवन के लिए कारगर
होती है। मनुष्य अपने जीवन में बहुत सारे
विचारों को सत्य मान लेता है।
सत्य का सम्बन्ध मानवीय प्रयोजनों
से है। मनुष्य ही सत्य का प्रयोग
करता है और उसका मूल्यांकन
करता है इसप्रकार मनुष्य के प्रयोग
और मूल्यांकन से स्वतंत्र सत्य का
अस्तित्व नहीं है। अर्थक्रियावाद
का यह विचार निरपेक्ष प्रत्ययवादियों
के विचार से मेल नहीं रखता है।
क्योंकि निरपेक्ष प्रत्ययवादी मानविय
प्रयोग और मूल्यांकन से स्वतंत्र
सत्यता का अस्तित्व मानते हैं लेकिन
अर्थक्रियावादी दार्शनिक सत्यता को
मानविय प्रयोग और मूल्यांकन
पर आश्रित मानते हैं।

इसप्रकार यह स्पष्ट
होता है कि जेम्स के अनुसार
कोई भी विश्वास अपने आप में
सत्य नहीं होता है। किसी विश्वास
की सत्यता का निर्धारण उसके
फल के आधार पर किया जाता
है। अगर इसका फल
दैनिक जीवन में उपयोगी
कारगर होता है तो उसे

सुगम पास-बुक

GRB BOOKS

Notes/

सत्य माना जाता है उन-कथा कथन
सत्यता को उन तीन उपायों के द्वारा निश्चित
माना है, आवश्यक नहीं है विश्वास का
आधारित हो न नहीं है अभाव
कोई भी विश्वास अपने आप में
सत्य नहीं होता है जिस प्रकार
ब्राह्मण सम्मान और शासन के
सम्मत आधारित करता है इसी प्रकार
किसी भी विश्वास की सत्यता को
आधारित किया जाता है

प्रश्न है कि अमूर्त सत्य का अस्तित्व है या नहीं
इस प्रश्न का उत्तर जेम्स भावात्मक
रूप में देते हैं। जिस प्रकार ह्यूम
ने यह स्वीकार किया था कि
कुछ मानसिक प्रत्ययों के बीच
मानवीय सम्बन्ध पाये जाते हैं
इसी प्रकार जेम्स भी स्वीकार करते
हैं कि मानसिक प्रत्ययों के
बीच सम्बन्ध की सत्यता आनुभविक
निरपेक्ष तथा अनुपाधिक है। इसकी
सत्यता शाश्वत है।

सत्यता और उपयोगिता के बीच सम्बन्ध को
लेकर जेम्स ने यह दिखलाने का
प्रयास किया है कि सत्यता और
उपयोगिता समानार्थक है अर्थात्
दोनों के बीच एकत्व सम्बन्ध
पाया जाता है। अगर कोई विश्वास
उपयोगी है तो वह सत्य है और
अगर कोई विश्वास
सत्य है तो वह
उपयोगी है। इससे

सुगम पास-बुक

Notes

स्थापना होता है कि अन्य
एक उपयोगी है। चूँकि यह स्थापना
हुई हो सकता है उपयोगी है और
उपयोगी भी सत्य है।

जेम्स सत्यता को एक मूल्य प्रत्यय के रूप में स्वीकार करते हैं। परम्परागत मूल्य प्रत्यय तीन कहा जाता है जो नैतिकता का आदर्श रूप है। "सत्यम शिवम, सुन्दरम" को भारतीय दर्शन में मूल्य प्रत्यय माना गया है। जेम्स भी सत्य को एक मूल्य प्रत्यय के रूप में ही स्वीकार करते हैं जिसका सम्बन्ध और भौतिक जीवन से है। सत्य शुभ का ही एक प्रकार है। यह शुभ से पृथक कोई स्वतंत्र धारणा नहीं है। चूँकि सत्य शुभ का ही एक रूप है। अतः जो सत्य होता है उसे हम शुभ भी कहते हैं। कभी कभी सत्य स्थापित को शुभ उचित को संज्ञा दी जाती है। सत्य भविष्य में होनेवाली कार्य की ओर संकेत करता है। आज के सत्य की भविष्य में उसी प्रकार असम्भव आवश्यक जिस प्रकार की परिस्थिति में इस सत्य होगी। मुगल शासन काल का इतिहास स्वतंत्रता के पूर्व जिस प्रकार माना जाता था सत्य है अब नहीं। इस प्रकार ऐतिहासिक सत्य भी बदलते रहते हैं। जेम्स के अनुसार सत्य बिल्कुल आत्मगत है या क्षणिक

GRB BOOKS
पास-बुक

GRB BOOKS

Notes

अनुभव का परिणाम है। कुछ अनुभव के बताता है कि हम विचारों की स्वतंत्र सम्भवता तीन प्रकार की होती है। हमारे जीवन काल तभी सत्य होने जाने में तीनों के अनुकूल हो। सबसे पहले इन्द्रि अनुभव का स्थूल तथ्य है (Concrete Facts of sense) यह हमको अपना और तत्व स्वीकार करने के लिए विवश करता है। यदि हमें विभ्रम न होती हम कुछ नहीं देख पायेंगे, जो हमारे सामने उपस्थित न हो। यह बात दूसरी है कि हम उपस्थित वस्तुओं में ही कुछ वस्तु देखें और कुछ उपस्थित कर दें। किन्तु अनुपस्थित वस्तु को देखने की क्षमता हम में नहीं है।

दूसरे प्रकार की अशरीरी वस्तुएँ और उनसे सम्बन्ध हैं। तर्कशास्त्र और गणित के सिद्धान्तों का न कोई मूर्त रूप है और न वे इन्द्रियों द्वारा जाने जाते हैं। उन्हें हम अपनी सुगम सूचना भी नहीं कह सकते हैं। वे सामान्य और अपरिवर्तनीय होते हैं। हम नई धारणायें बना सकते हैं किन्तु पुरानी धारणायें बदल नहीं सकते हैं। तर्कशास्त्र के आधारभूत सिद्धान्त तादात्म्य और विरोध के नियम तथा गुण धर्म नियम नहीं बदल सकते हैं। तीसरे कोई तर्कवाक्य की रचना

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB
BOOKS

~~Notes! कर्मों में हमारे जानने पहले से अनुसार वस्तुओं का सीमा-बन्धन होता है। उनको छोड़कर किसी नये वस्तु की रचना नहीं की जा सकती है। इसलिए सत्य नहीं हमारे जा सकते हैं। जब उनके स्थान में विशुद्ध नये सत्यों का स्थापना कर दें और उनके द्वारा शेष सत्यों को यथावत रूपान्तरित नहीं। इन तीन प्रकार के तत्वों में दूसरा तत्व बिल्कुल अपरिवर्तनशील है। पहले तत्व में थोड़ा बहुत परिवर्तन होता है। तीसरे में परिवर्तन अवश्य होता है लेकिन धीरे-धीरे। जैसे-जैसे मानवी ज्ञान का विकास होता है, यह कुछ बदल सकता है।~~

जेम्स के सत् सम्बन्धी इन सिद्धान्तों से स्पष्ट हो जाता है कि वह बहुत कुछ वस्तुवादी है क्योंकि वह मानता है कि ईश्वर ज्ञान की स्वतंत्र विश्व की सत्ता है और उसपर हमारे जानने न जानने का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि जेम्स मानसवादी नहीं है। संसार के सम्बन्ध में जेम्स की धारणा है कि वह स्थिर और यन्त्रवत नहीं है, वह विकसित हो रहा है, उसमें प्रायः नवीनताएँ उदित हुआ करती है इसके विकास में मानवमन की स्वतन्त्रता भी कारगर है।

इस तरह हम

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS

GRB BOOKS

Notes

देखते हैं कि सत्य स्थिर न होकर परिवर्तनशील है। केवल जीवन के विचार ही नहीं बदलते रहते बल्कि विज्ञान के सत्य भी परिवर्तित होते रहते हैं। जैसे - परमाणु पहले अविभाज्य माना जाता था। किन्तु अब इसका विभाजन कर लिया गया है। अतः अब वह विभाज्य माना जाता है। इसप्रकार समय परिस्थिति और स्थान के अनुसार सत्य बदलता रहता है। किसी एक सिद्धान्त या विचार को हमेशा के लिए सत्य मान बैठना रूढ़िवादिता का प्रतीक है। इसप्रकार सत्यता सम्बन्धी जेम्स का यही विचार है।

सुगम पास-बुक
AN EASY APPROACH TO GET SUCCESS